Dr.Sunita Kumari,
Guest Assistant Professor,
Dept. Of Home Science,
SNSRKS College, Saharsa
BA Part-III
Dt. 09/04/2022

Q. विद्यालय में बालक के व्यक्तित्व विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है ,वर्णन करें ?

जब पहली कक्षा या नर्सरी में बालक प्रथम बार प्रवेश लेता है तो उसमें स्कूल से पूर्व की अभिवृत्तियाँ और से व्यवहार प्रतिमान होते हैं। स्कूल से पूर्व की अभिवृत्तियाँ और व्यवहार प्रतिमान पारिवारिक वातावरण में विकसित हुए होते हैं। परिवार में बालक को जितनी सुरक्षा मिलती है, उतनी सुरक्षा उसे विद्यालय में प्राप्त नहीं होती है। स्कूल बालक के लिए बिल्कुल एक नयी परिस्थिति होती है, जिसमें धीरे-धीरे वह अधिगम और उपलब्धियों को प्राप्त करना सीखता है। स्कूल के क्रियाकलाप घर की अपेक्षा पूर्णतः भिन्न होते हैं। स्कूल में बालक को न केवल स्कूल के वातावरण के साथ समायोजन करना सीखना पड़ता है, बल्कि उसे अपने सहपाठियों और गुरुजनों के साथ भी समायोजन करना सीखना पड़ता है। बालक के लिए स्कूल का पहला दिन सुखद घटना भी हो सकती है और गम्भीर संवेगात्मक संकट (Serious Emotional Crisis) भी हो सकता है।

स्कूल शिक्षा का महत्त्वपूर्ण श्रेष्ठ और सक्रिय साधन है। बालक के व्यक्तित्व विकास में स्कूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एल० ई० लॉगस्ट्रे (L. E. Longstreth, 1974) ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह स्थिर किया है कि पाँच वर्ष की आयु तक बालक की समस्त सामाजिक अन्तःक्रियाएँ माता-पिता तथा अन्य पारिवारिकजनों के साथ सम्बन्धित होती हैं। पाँच-छ: वर्ष की अवस्था में जब बालक विद्यालय में प्रवेश लेता है तो उसकी अन्तःक्रियाओं का दायरा बढ़ जाता है। विद्यालय के मित्रों और अध्यापकों के साथ उसकी अन्तःक्रियाएँ प्रारम्भ हो जाती हैं। लगभग सात वर्ष की अवस्था में बालक की यह अन्तःक्रियाएँ अधिक बढ़ने लग जाती हैं। ग्यारह-बारह वर्ष की अवस्था तक उसकी विद्यालय से सम्बन्धित अन्तःक्रियाएँ परिवार की अपेक्षा अधिक हो जाती हैं। जब तक बालक विद्यालय से सम्बन्धित रहता है, तब तक उसमें यह अन्तःक्रियाएँ बनी रहती हैं।

1. नर्सरी स्कूल और बाल विकास
नर्सरी स्कूल में जाने वाले बालकों की आयु में थोड़ा-बहुत अन्तर होता है। बहुधा आयु का यह अन्तर माता-पिता की अभिवृत्तियों के कारण होता है। कुछ माता-पिता यह सोचते हैं कि उनका बच्चा अभी बहुत छोटा है और जाने स्कूल लायक नहीं है, कुछ लोग यह सोचते हैं कि उनका बच्चा अपरिपक्व है और उसे अभी घर में ही रहना चाहिए।

नर्सरी स्कूल के बच्चों पर किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि नर्सरी स्कूल के वह बच्चे जिनके माता-पिता का समायोजन अच्छा होता है, स्कूल में ऐसे बच्चों का समायोजन भी अच्छा होता है। इन बच्चों के दोस्त जल्दी बन जाते के में हैं। यह बच्चे स्कूल के कार्यों भी अन्य असमायोजित बच्चों की अपेक्षा अधिक अच्छे होते हैं। एक अध्ययन (Baldwin, A.L., 1949) में यह देखा गया कि नर्सरी स्कूल के वह बच्चे, जिनके परिवार का वातावरण प्रजातान्त्रिक प्रकार का होता है, अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील और बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले होते हैं। इन बच्चों में कुछ और विशेषताएँ भी देखी गयी हैं, जैसे—यह मित्र होते हैं, अन्य साथी बच्चों में लोकप्रिय होते हैं, मौलिकता और निर्माणशीलता के गुण अधिक मात्रा में होते हैं, इनमें बौद्धिक जिज्ञासा भी अन्य बच्चों की अपेक्षा कम मात्रा में होती है। इस अध्ययन में यह भी देखा गया कि जिन बच्चों में आश्रितता अधिक होती है तथा अपने माता-पिता के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्धों में अधिक बँधे होते हैं, उन बच्चों में उपर्युक्त बच्चों की अपेक्षा विपरीत विशेषताएँ पायी जाती हैं।

नर्सरी स्कूल के अनेक बच्चों में रोने-चिल्लाने सम्बन्धी व्यवहार भी देखे जाते हैं। इस प्रकार के व्यवहार बहुधा उन बच्चों में पाये जाते हैं, जिनकी पारिवारिक ट्रेनिंग सही ढंग से नहीं होती है। कई बार बच्चे दूसरे बच्चों को रोता देखकर सहानुभूति के कारण रोने लगते हैं। नर्सरी स्कूल के बच्चों के रोने के कारणों को स्पष्ट करते हुए एल० डी० क्रो और

ए० को (L. D. Crow & A. Crow, 1962) ने लिखा है कि, "Boys seem to cry because of conflicts with adults and frustrations by objects in the environment, girls tend to cry because of a real or imagined injury to their person."

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि नर्सरी स्कूल के अध्यापक बालक के साथ-साथ उनके परिवारों के सम्बन्ध में यदि जानकारी रखते हैं तो उन्हें बालकों को समझने व उन्हें शिक्षा देने में अधिक सुविधा रहती है। अच्छे नर्सरी स्कूलों में अध्यापक बालकों की क्रियाओं को सुझावों के द्वारा नियन्त्रित और निर्देशित करते हैं।

2. प्राइमरी विद्यालय के अनुभव और बाल विकास

जब बालक को प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाता है तो उसे विद्यालय के वातावरण, अध्यापकों और सहपाठियों के साथ समायोजन करना सीखना पड़ता है। जो बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश से पूर्व नर्सरी स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर चुके होते हैं, उन्हें नये वातावरण में समायोजन करने में उतनी कठिनाई नहीं होती, जितनी कि उन बालकों को जिनका विद्यालय में पहली बार प्रवेश हुआ है। इसी प्रकार से यह भी देखा गया है कि जिन बच्चों को अच्छा पारिवारिक वातावरण और प्रशिक्षण मिला है, उनका विद्यालय में समायोजन अन्य बच्चों की अपेक्षा जल्दी और अच्छा हो जाता है।

प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सर्वांगीण शिक्षा के लिए आवश्यक है कि विद्यालय के अध्यापक बालक के अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखें।

विद्यालय में कक्षा का वातावरण मुख्यतः तीन प्रकार का हो सकता है-

1. प्रजातन्त्रात्मक वातावरण (Democratic Environment)- इस प्रकार की कक्षाओं में अध्यापक और विद्यार्थी मिलकर यह निश्चय करते हैं कि उन्हें कक्षा में क्या कार्य करना है। इस प्रकार की कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अनेक विशेषताएँ देखी जाती हैं, जैसे—यह विद्यार्थी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के साथ मित्रवत् व्यवहार करते हैं, अध्यापक की अनुपस्थिति में भी एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करते हैं, विद्यार्थियों में सहयोग की भावना अधिक होती है।

2. निरंकुशवादी वातावरण (Authoritarian Environment)- इस प्रकार का वातावरण उन कक्षाओं में देखने को मिलता है, जिनमें कक्षा-अध्यापक ही सर्वेसर्वा होता है। कक्षा अध्यापक ही कक्षा के क्रिया-कलापों का निर्णय लेता है। इस प्रकार के वातावरण में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में विद्रोह की प्रवृत्ति, निष्क्रियता की प्रवृत्ति अधिक मात्रा में पायी जाती है। ऐसी कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी अध्यापक की अनुपस्थिति में कोई रचनात्मक कार्य नहीं कर पाते हैं। ऐसे वातावरण में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में साथ ही सहपाठियों के प्रति सहयोग के स्थान पर विरोध का भाव पाया जाता है

3. स्वतन्त्रता का वातावरण (Independent Environment) – इस प्रकार का वातावरण उन कक्षाओं में होता है, जहाँ अध्यापक विद्यार्थियों को पूरी छूट देता है और कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सुझावों को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता है। ऐसे वातावरण वाली कक्षाएँ बहुत कम मात्रा में देखी जाती हैं। इस प्रकार की कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में परस्पर द्वेष का भाव पाया जाता है। इन विद्यार्थियों में रचनात्मकता का अभाव और इनमें कोई व्यवस्था भी नहीं पायी जाती है।